



नव वर्ष 2026 की शुभकामनायें

“ब्रह्मा बाप समान जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो”

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहनों प्रति शुभ प्रेरणायें (याद पत्र 20-12-2025)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, ब्रह्मा बाप समान जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करने वाले, ब्राह्मण सो फरिश्ता अर्थात् जीवनमुक्त आत्मायें, निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें, ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद के साथ-साथ आज नये वर्ष की, नये युग के आगमन की सबको बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां।

नया वर्ष नया उमंग, नया उत्साह लेकर आ रहा है। जरूर हर एक के अन्दर इस नये वर्ष में कुछ न कुछ नया करने का प्लैन चल रहा होगा। देखो, अभी यज्ञ स्थापना के 90 वर्ष पूरे हो रहे हैं। कैसे शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा द्वारा यज्ञ की स्थापना की, एक छोटा बीज बोया, जो आज पूरे विश्व में वट वृक्ष के रूप में फैलकर सबको रूहानी स्नेह और शक्तियों की सकाश दे रहा है। इस बेहद रूद्र यज्ञ में कितनी आत्माओं ने अपना तन-मन-धन सफल करके अपना श्रेष्ठ भाग्य बनाया है और अभी भी बना रहे हैं। अब तो बस यही शुभ संकल्प है कि पूरे विश्व में बाबा का यह यज्ञ और यज्ञ पिता का नाम रोशन हो जाए, इसके लिए हम सबको एकता के सूत्र में बंधकर, सेवाओं के साथ-साथ ऐसी तपस्या करनी है जो चारों ओर साक्षात्कार की लहर फैले और सबके दिल से निकले, यही है, यही है...

तो इस नये वर्ष की शुभ बधाइयों के साथ आओ हम सब मिलकर विशेष ब्रह्मा बाबा के अव्यक्ति मास को जीवनमुक्त मास के रूप में मनायें। सभी अन्तर्मुखी बन अव्यक्ति वतन की सैर करें। रोज कम से कम 4 घण्टा एकान्त में बैठ योग तपस्या करें। सब तरफ संगठित रूप में भी शक्तिशाली योग भट्टियां चलती रहें। यह योग तपस्या ही अनेक प्रकार के विघ्नों को समाप्त कर परमात्म प्रत्यक्षता के निमित्त बनेंगी।

वर्तमान समय विश्व में चारों तरफ प्रकृति की हलचल, विकारों का फुल फोर्स, हर क्षेत्र में अति होती जा रही है। बाबा कहते बच्चे, यह अति ही अन्त की निशानी है, इसके बाद ही आदि होगी अर्थात् स्वर्णिम सवेरा आयेगा। अभी सिर्फ सेवाओं का जो थोड़ा सा पार्ट रहा हुआ है, उसे अपनी श्रेष्ठ स्थिति और खुशनुमा, खुशमिजाज चेहरे द्वारा सम्पन्न करना है और सम्पन्न बनकर बाबा के साथ उड़ना है।

प्रत्यक्षता, पश्चाताप और परिवर्तन ... यह तीनों दृश्य अचानक सामने आयेंगे। बोलो, इसके लिए सभी एवररेडी हो ना! तो सेवाओं के विस्तार में अपनी सार स्वरूप स्थिति को भूलना नहीं। जब तक कर्मेन्द्रियों का आधार है, कर्म तो करना ही है, लेकिन कर्म-बन्धन नहीं, कर्म-सम्बन्ध। जीवन-मुक्त अवस्था अर्थात् सफलता भी ज्यादा और कर्म का बोझ भी नहीं। ऐसी स्थिति बनाने का सहज साधन है—‘मैं’ और ‘मेरा बाबा’! जब ‘एक मेरा’ में ‘सब मेरा-मेरा’ समा जायेगा तब कहेंगे बंधनमुक्त, जीवनमुक्त। तो सदा यही लक्ष्य रख जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करते चलो। साक्षीदृष्टा की सीट पर बैठ एक सेकण्ड में फुलस्टाप लगाने का अभ्यास बढ़ाते चलो।

अच्छा – आप सबका स्वास्थ्य ठीक होगा। सभी को बहुत-बहुत स्नेह भरी याद..

ईश्वरीय सेवा में,

बी के मोहिनी

मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज



ये अव्यक्त इशारे



इस अव्यक्ति मास में बन्धनमुक्त रह जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो

1) बापदादा चाहते हैं - मेरा एक एक बच्चा मुक्ति-जीवनमुक्ति के वर्से के अधिकारी बनें। अभी के अभ्यास की सतयुग में नेचुरल लाइफ होगी लेकिन वर्से का अधिकार अभी संगम पर है इसलिए अगर कोई भी बंधन खींचता है तो कारण सोचो और निवारण करो।

2) जीवन में रहते, समय नाजुक होते, परिस्थितियाँ, समस्यायें, वायुमण्डल डबल दूषित होते हुए भी उसके प्रभाव से मुक्त, जीवन में रहते इन सर्व भिन्न-भिन्न बन्धनों से मुक्त रहना है। एक भी सूक्ष्म बन्धन नहीं हो। ऐसा हर एक ब्राह्मण बच्चे को बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त बनना है। संगमयुग पर ही इस जीवनमुक्त स्थिति की प्रालब्ध का अनुभव करना है।

3) मैजॉरिटी बच्चों ने अभी लोहे की जंजीरें तो काट ली हैं लेकिन बहुत महीन और रॉयल धागे अभी भी बंधे हुए हैं। कई पर्सनैलिटी फील करने वाले हैं, स्वयं में अच्छाईयाँ हैं नहीं लेकिन महसूस ऐसे होती हैं कि हम बहुत अच्छे हैं। हम बहुत आगे बढ़ रहे हैं। यह जीवन-बन्ध के धागे मैजॉरिटी में हैं, बापदादा अब इन धागों से भी मुक्त, जीवनमुक्त देखना चाहते हैं।

4) अभी जो भी परिस्थितियाँ आ रही हैं या आने वाली हैं, प्रकृति के पांचों ही तत्व अच्छी तरह से हिलाने की कोशिश करेंगे परन्तु जीवनमुक्त विदेही अवस्था की अभ्यासी आत्मा अचल-अडोल पास विद आनर होकर सब बातें सहज पास कर लेगी इसलिए निरन्तर कर्मयोगी, निरन्तर सहज योगी, निरन्तर मुक्त आत्मा के संस्कार अभी से अनुभव में लाने हैं।

5) अभी आप सब ऐसे मुक्त बन मास्टर मुक्तिदाता बनो जो सर्व आत्मायें, प्रकृति, भगत मुक्त हो जाएं। अभी ब्रह्मा बाप इसी एक बात में डेट कान्सेस हैं, कि मेरा एक-एक बच्चा कब जीवन मुक्त बनेगा? ऐसे नहीं समझना कि अन्त में जीवनमुक्त बनेंगे, नहीं। बहुतकाल से जीवनमुक्त स्थिति का अभ्यास, बहुतकाल जीवनमुक्त राज्य भाग्य का अधिकारी बनायेगा।

6) जब आप अभी जीवनमुक्त बनो तो आपकी जीवनमुक्त स्थिति का प्रभाव जीवनबंध वाली आत्माओं का बंधन समाप्त करेगा। तो वह डेट कब होगी जब सब जीवनमुक्त होंगे? कोई

बंधन नहीं। सब बन्धनों में पहला एक बंधन है—देह भान का बंधन, उससे मुक्त बनो। देह नहीं तो दूसरे बंधन स्वतः ही खत्म हो जायेंगे।

7) अपने को वर्तमान समय में टीचर हूँ, मैं स्टूडेंट हूँ, मैं सेवाधारी हूँ, इस समझने के बजाए अमृतवेले से यह अभ्यास करो कि मैं श्रेष्ठ आत्मा ऊपर से आई हूँ — इस पुरानी दुनिया में, पुराने शरीर में सेवा के लिए। मैं आत्मा हूँ — यह पाठ अभी और पक्का करो। मैं सेवाधारी हूँ, यह पाठ पक्का है लेकिन मैं आत्मा सेवाधारी हूँ यह पाठ पक्का कर लो तो जीवनमुक्त बन जायेंगे।

8) ब्राह्मण जीवन का मजा जीवनमुक्त स्थिति में है। न्यारा बनना अर्थात् मुक्त बनना। संस्कार के ऊपर भी झुकाव नहीं। क्या करूँ, कैसे करूँ, करना नहीं चाहते थे लेकिन हो गया — यह है जीवन-बन्ध बनना। इच्छा नहीं थी लेकिन अच्छा लग गया, शिक्षा देनी थी लेकिन क्रोध आ गया — यह है जीवन-बन्ध स्थिति। ब्राह्मण अर्थात् जीवनमुक्त। कभी भी ऐसे किसी बंधन में बंध नहीं सकते।

9) ज्ञान-खजाने द्वारा इस समय ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करना है। जो भी दुःख और अशान्ति के कारण हैं, विकार हैं उनसे मुक्त होना है। अगर कोई विकार आते भी हैं तो विजयी बन जाना है, हार नहीं खानी है। अनेक व्यर्थ संकल्प और विकल्प, विकर्मों से मुक्त बनना — यही जीवनमुक्त अवस्था है।

10) ब्राह्मण सो फरिश्ता अर्थात् जीवनमुक्त, जीवन-बंध नहीं। न देह का बंधन, न देह के संबंध का बंधन, न देह के पदार्थों का बंधन। अगर अपनी देह का लगाव खत्म किया तो देह के संबंध और पदार्थ का बंधन आपेही खत्म हो जायेगा। ऐसे नहीं कोशिश करेंगे। 'कोशिश' शब्द ही सिद्ध करता है कि पुरानी दुनिया की कशिश है। इसलिए 'कोशिश' शब्द समाप्त करो। देहभान को छोड़ो।

11) वैसे बंधना किसी को भी अच्छा नहीं लगता है, लेकिन जब परवश हो जाते हो तो बंध जाते हो। तो चेक करो कि परवश आत्मा हैं या स्वतन्त्र हैं? जीवन-मुक्ति का मजा तो अभी है। भविष्य में जीवन-मुक्त और जीवन-बन्ध का कान्ट्रास्ट नहीं होगा।

इस समय के जीवनमुक्त का अनुभव श्रेष्ठ है। जीवन में हैं लेकिन मुक्त हैं, बन्धन में नहीं हैं।

12) आप लोगों का स्लोगन है – मुक्ति और जीवन-मुक्ति हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। परमधाम में तो यह पता ही नहीं पड़ेगा कि मुक्ति क्या है, जीवन-मुक्ति क्या है, इसका अनुभव इस ब्राह्मण जीवन में अभी करना है।

13) जब आपकी रचना कमल पुष्प जल में रहते जल के बन्धन से मुक्त है। तो जब रचना में यह विशेषता है तो क्या मास्टर रचता में नहीं हो सकती? जब कभी बंधन में फंस जाओ तो अपने सामने कमल पुष्प का दृष्टान्त रखो कि जब कमल पुष्प न्यारा-प्यारा बन सकता है तो क्या मास्टर सर्वशक्तिवान नहीं बन सकते! तो सदा बन जायेंगे।

14) ब्राह्मण जीवन में देह का बंधन, संबंध का बंधन, साधनों का बंधन – सब खत्म हो गया ना! कोई बंधन नहीं। बंधन अपने वश में करता है और संबंध स्नेह का सहयोग देता है। तो देह के सम्बन्धियों का देह के नाते से सम्बन्ध नहीं लेकिन आत्मिक संबंध है। ऐसे ब्राह्मण अर्थात् जीवन-मुक्त।

15) जब तक कर्मेन्द्रियों का आधार है तो कर्म तो करना ही है, लेकिन कर्म-बन्धन नहीं, कर्म-सम्बन्ध। जीवन-मुक्त अवस्था अर्थात् सफलता भी ज्यादा और कर्म का बोझ भी नहीं। जो मुक्त हैं वो सदा ही सफलतामूर्त हैं। जीवन-मुक्त आत्मा सदा फलक से कहेगी कि विजय निश्चित है, सफलता जन्मसिद्ध अधिकार है।

16) सदा जीवन-मुक्त रहने का सहज साधन है – ‘मैं’ और ‘मेरा बाबा’! क्योंकि मेरे-मेरे का ही बंधन है। मेरा बाबा हो गया तो सब मेरा खत्म। जब ‘एक मेरा’ में ‘सब मेरा-मेरा’ समाप्त हो गया, तो बंधन-मुक्त हो गये। तो यही याद रखना कि हम ब्राह्मण जीवन-मुक्त आत्मा हैं।

17) जो परमात्म ज्ञानी बच्चे हैं, उन्हें ज्ञान का फल मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा संगम पर ही प्राप्त होता है। ज्ञान अर्थात् समझ। समझदार हर कर्म करते हुए सदा स्वयं को बन्धनमुक्त, सर्व आकर्षणों से मुक्त बनाने की समझ रखता है। उनके हर संकल्प, बोल, कर्म, सम्बन्ध और सम्पर्क में मुक्ति-जीवनमुक्ति की स्टेज रहती है, जिसको न्यारा और प्यारा कहते हैं।

18) जैसे बाप सदा स्वतंत्र है – ऐसे बाप समान बने। बापदादा अब बच्चों को परतंत्र देख नहीं सकते। अगर स्वयं को स्वतंत्र नहीं कर सकते हो, स्वयं ही अपनी कमजोरियों में गिरते रहते हो तो विश्व परिवर्तक कैसे बनेंगे! अब इस स्मृति को बढ़ाओ कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ, इससे सहज सर्व पिंजड़ों से मुक्त उड़ता

पंछी बन जायेंगे।।

19) अपने स्थूल और सूक्ष्म बन्धनों की लिस्ट सामने रखो। लक्ष्य रखो कि मुझे बन्धनमुक्त बनना ही है। “अब नहीं तो कब नहीं” - सदा यही पाठ पक्का करो। “स्वतंत्रता ब्राह्मण जन्म का अधिकार है” - अपना जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त कर जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करो। जब अपने को गृहस्थी समझते हो तब गृहस्थी का जाल होता। गृहस्थी बनना माना जाल में फँसना। ट्रस्टी अर्थात् मुक्त।

20) अभी समय की बचत, संकल्पों की बचत, शक्ति के बचत की योजना बनाकर बिन्दी रूप की स्थिति को बढ़ाओ। जितना बिन्दी रूप की स्थिति होगी उतना कोई भी ईविल स्पिट वा ईविल संस्कार का फोर्स आप लोगों पर वार नहीं करेगा, आप भी उनसे मुक्त रहेंगे और आपका शक्तिरूप उन्हीं को भी मुक्त करेगा।

21) जैसे और स्थूल वस्तुओं को जब चाहो तब लो और जब चाहो तब छोड़ दो। वैसे देह के भान को जब चाहो तब छोड़कर देही-अभिमानि बन जाओ – यह प्रैक्टिस इतनी सरल हो, जितनी कोई स्थूल वस्तु की सहज होती है। रचयिता जब चाहे रचना का आधार ले, जब चाहे तब रचना के आधार को छोड़ दे, जब चाहे तब न्यारे, जब चाहें तब प्यारे बन जायें - इतना बन्धनमुक्त बने।

22) स्वयं को बन्धनों से मुक्त करने के लिए अपनी चलन को और जो कड़ा संस्कार है उसे चेन्ज करो। बंधन डालने वाले अपना काम करें, आप अपना काम करो। उनके काम को देख घबराओ नहीं। जितना वो अपना काम फोर्स से कर रहे हैं, आप अपना फोर्स से करो। उनके गुण उठाओ कि वह कैसे अपना कर्तव्य कर रहे हैं, आप भी करो। अपने को बन्धनों से मुक्त करने की युक्ति रचो।

23) जब सेवा में वा अपने पुराने संस्कारों को परिवर्तन करने में सफलता नहीं मिलती है तो कोई न कोई विघ्न के वश हो जाते हो। फिर उनसे मुक्त होने की इच्छा रखते हो, लेकिन बिना शक्ति के यह इच्छा पूर्ण नहीं हो सकती इसलिए अंलकारी रूप बने। शक्तिरूप धारण करो।

24) मास्टर त्रिकालदर्शी बनकर हर कर्म, हर संकल्प करो वा वचन बोलो, तो कोई भी कर्म व्यर्थ वा अनर्थ वाला नहीं हो सकता। त्रिकालदर्शी अर्थात् साक्षीपन की स्थिति में स्थित होकर इन कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करेंगे तो कर्म के वशीभूत नहीं होंगे। सदा कर्म और कर्म के बन्धन से मुक्त बन अपनी ऊंची स्टेज को प्राप्त कर लेंगे।

25) ज्ञान-स्वरूप मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्तिमान होने के बाद अगर कोई ऐसा कर्म जो युक्तियुक्त नहीं है, वह कर लेते हो तो इस कर्म का बन्धन अज्ञान काल के कर्मबन्धन से पदमगुणा ज्यादा है। इस कारण बन्धनयुक्त आत्मा स्वतन्त्र न होने कारण जो चाहे वह नहीं कर पाती। इसलिए युक्तियुक्त कर्म द्वारा मुक्ति को प्राप्त करो।

26) अपने संकल्पों के तूफान वा कोई भी सम्बन्ध द्वारा, प्रकृति वा समस्याओं द्वारा तूफान व विघ्न आते हैं तो उनसे मुक्ति पाने के लिए योग युक्त, युक्ति-युक्त बनो। जब तक योगयुक्त नहीं तब तक विघ्नों से युक्त हो।

27) जीवन-बन्ध के साथ ही जीवन-मुक्त का अनुभव होता है, वहाँ तो जीवन-बन्ध की बात ही नहीं। वहाँ तो सिर्फ उसी प्रारब्ध में होंगे, मुक्तिधाम की मुक्ति का अनुभव जो अभी कर सकते हो वह वहाँ नहीं कर सकेंगे इसलिए संगमयुग पर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करो। वर्षों के अधिकारी तो बने हो अब उसे जीवन में धारण कर पूरा लाभ उठाओ।

28) पहले अपनी देह से, देह के सम्बन्ध से और पुरानी दुनिया की स्मृति से मुक्त बनो। जब इस मुक्ति की अवस्था का अनुभव करेंगे तब मुक्त होने के बाद जीवन मुक्ति का अनुभव स्वतः होगा। तो चेक करो जीवन में रहते हुए देह, देह के सम्बन्ध और पुरानी दुनिया की आकर्षण से कहाँ तक मुक्त बने हैं?

29) जब तक किसी भी प्रकार का लगाव है, चाहे वह संकल्प के रूप में हो, चाहे सम्बन्ध के रूप में, चाहे सम्पर्क के रूप में, चाहे अपनी कोई विशेषता की तरफ हो। कोई भी लगाव बन्धन-युक्त कर देगा। वह लगाव अशरीरी बनने नहीं देगा और वह विश्व-कल्याणकारी भी बना नहीं सकेगा इसलिए पहले स्वयं लगाव मुक्त बनो तब विश्व को मुक्ति व जीवनमुक्ति का वर्सा दिला सकेंगे।

30) यदि कोई भी स्वभाव, संस्कार, व्यक्ति अथवा वैभव का बन्धन अपनी तरफ आकर्षित करता है, तो बाप के याद की आकर्षण सदैव नहीं रह सकती। कर्मातीत बनना माना सर्व कर्म बन्धनों से मुक्त, न्यारे बन, प्रकृति द्वारा निमित्त-मात्र कर्म कराना। यह न्यारे बनने का पुरुषार्थ बार-बार करते रहो। सहज और स्वतः यह अनुभूति हो कि “कराने वाला और करने वाली यह कर्मन्द्रियाँ हैं ही अलग।”

31) स्वदर्शन चक्रधारी सो छत्रधारी बनो तो देह की स्मृति के अनेक व्यर्थ संकल्पों के चक्र से, लौकिक और अलौकिक सम्बन्धों के चक्र से, अपने अनेक जन्मों के स्वभाव और संस्कारों के चक्र से और प्रकृति के अनेक प्रकार की आकर्षण के चक्र से जब मुक्त हो जायेंगे तब अन्य आत्माओं को भी बाप से प्राप्त हुई शक्तियों द्वारा अनेक चक्करों से सहज ही छुड़ाकर जीवनमुक्त बना सकेंगे।

(त्रिमूर्ति दादियों द्वारा मिली हुई अनमोल शिक्षायें)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

20-12-2025

मधुबन

गुल्जार दादी जी की अनमोल शिक्षायें

“सदा याद में रहो, खुशी की खुराक खाते रहो तो सदा हेल्दी-वेल्टी रहेंगे”

(26-07-11)

सभी के चेहरे, सभी के मुखड़े खुशनुमा खुशनसीब दिखाई दे रहे हैं। बाबा ने हमको खुशी की सौगात दी है। हमारा चेहरा कैसा होना चाहिए, चलन कैसी होनी चाहिए, स्मृति क्या होनी चाहिए, यह सब बाबा ने बता दिया है। तो बाबा की सौगात ‘खुशी’ हमको कितनी सम्भाल कर रखनी चाहिए। अमूल्य चीज़ है और खुशी ऐसी चीज़ है जो स्वस्थ भी है और धनवान भी है। हेल्थ, वेलथ, हैपी तीनों का कनेक्शन है। खुशी के लिए कहा जाता है खुशी जैसा कोई खजाना नहीं। खुशी जैसा कोई भोजन नहीं। 36 प्रकार के

भोजन हो लेकिन खुशी न हो तो वह भोजन कैसा लगेगा! सूखी रोटी हो और खुशी हो तो वह कैसी लगेगी इसलिए खुशी जाती है तो हेल्थ वेलथ सब चली जाती है। तो बाबा का यह स्लोगन याद रखना कि याद में रहना है और खुशी बांटनी है। जितनी खुशी बाटेंगे उतनी बढ़ेगी। यह अनुभव तो सभी को होगा।

अभी तो बाबा कहते हैं हमारा सतयुगी राज्य आया कि आया। दुनिया वाले सोचते हैं कल क्या होगा! और हम सोचते हैं कल हमारा राज्य आया कि आया, सामने दिखाई दे रहा है इसलिए

सभी के चेहरे ऐसे खुशनुमा दिखाई दें जो दूसरे भी चेहरे को देखकर समझें कि इन्हों को क्या मिला है! स्वयं ही पूछने आवें।

अभी का होमवर्क जो बाबा ने दिया है, एक तो यह अभ्यास करो कि सेकण्ड में बिन्दी लगा सकते हैं! बिन्दी बनो, बिन्दी देखो, एक सेकण्ड में बिन्दी लगाओ क्योंकि समय ऐसा आने वाला है, अगर सेकण्ड में बिन्दी लगाने का अभ्यास होगा तो तूफानों से बच सकेंगे। दूसरा - बाबा ने बच्चों की रिजल्ट देखी, रिजल्ट में बाबा ने देखा, कि बच्चों को कभी-कभी अपने पुराने संस्कार स्वभाव परेशान करते हैं। तो अभी संस्कार मिलन की रास सीखो। जैसे रास में हाथ में हाथ मिलाया जाता है ऐसे संस्कार मिलन की रास करो। यह दो बातें आने वाले समय के लिए बाबा ने सेफ्टी का साधन बताया है, जो हम सभी के अटेंशन में होना चाहिए। अभी से बिन्दी लगाने की कोशिश करो। पेपर के टाइम और कोई तैयारी नहीं की जाती है इसलिए बाबा ने सुनाया था कि कभी वेस्ट थॉट्स या ऐसी कोई बातें हो जाती हैं जब उसका तूफान आता है, तो सेकण्ड में बिन्दी लगती है या नहीं यह ट्रायल करो। अभी की ट्रायल आपको समय पर काम आयेगी। यह बाबा के दो काम मिले हुए हैं। अभी बाबा आयेगा तो पूछेगा कि सभी ने होमवर्क किया? तो अच्छे स्टूडेंट होमवर्क पहले से कर लेते हैं। आप सभी तो नम्बरवन स्टूडेंट हो ना। (सभी ने ताली बजाई) बाबा भी देखकर ताली बजाता है। तो नवम्बरवन रहना, वन माना विन। बाबा हमारे साथ है तो क्या बड़ी बात है।

प्रश्न:- दादी जी संस्कार की भिन्नता होते भी टकराव न हो, उसके लिए क्या विधि अपनायें?

उत्तर:- यह हमारा परिवार है। परिवार में हमारा ही बहन है, हमारा ही भाई है। परिवार में कभी कोई ढीला होता है तो क्या उसको ऐसे ही छोड़ा जाता है। अगर परिवार से प्यार है तो परिवार की कोई भी आत्मा की कमजोरी देखकर आता है कि उसको सहयोग दें। कईयों में छोटी-छोटी बातें नोट करने की आदत होती है, इससे अपने को ही परेशान करते हैं इसलिए बाबा ने कहा अपने जेब में सहयोग के नोट जमा कर लो। तो आपकी जेब में कौन से नोट हैं? सहयोग के नोट अगर हैं तो हम कभी भी टक्कर नहीं खायेगे लेकिन सहयोगी बनकर उनको भी अपने साथ और ऊंचा उठायेगे।

प्रश्न:- दादी जी, पेपर परिस्थितियां सामने हों, उस समय सेकण्ड में फुलस्टाप कैसे लगायें?

उत्तर:- इसमें मेहनत जरूर लगती है, इसके लिए अभी से अभ्यास करो। अभी सरकमस्टांश नहीं हैं, तो अभी अभ्यास कर लो तो फिर समय पर आपको मदद मिल जायेगी क्योंकि कई बातें

सारे दिन में आती हैं, या कभी कभी आती है जिसमें मन में तनाव हो जाता है, ऐसे टाइम पर बिन्दी लगाकर देखो कि बिन्दी बन सकता हूँ या शरीर भान में आ जाता हूँ? संस्कार देखने लग जाता हूँ? अगर अभी अभ्यास होगा तो उस समय सहज हो जायेगा।

ड्रामा की बिन्दी लगायेंगे तो पास हो जायेंगे। क्यों, क्या में जायेंगे तो बाबा भी याद नहीं आयेगा, खुद की भी स्मृति नहीं रहेगी।

प्रश्न:- दादी जी बाबा कहते हैं मन्सा सेवा करो, सकाश दो, हमें कैसे पता चले हमारी मन्सा वहाँ तक पहुंचती है?

उत्तर:- अभी जापान में जब सुनामी आई थी तो उस समय दो तत्वों ने काम किया। तब वहाँ जो सेन्टर है, वहाँ रहने वाली जो बहिनें थी, उस स्थान से वह थोड़ा दूर थी। उनके पास कुछ नहीं हुआ लेकिन डर बहुत था। उन्होंने पत्र लिखे कि हालतें डर की हैं लेकिन हमें आप सबके मन्सा सकाश की बहुत मदद मिल रही है। हमें लगता है कि मन्सा से बहुत से भाई बहिनें हम सबको बहुत शक्ति दे रहे हैं। आपकी दी हुई शक्ति हमको चला रही है। तो यह मिसाल देखा कि प्रैक्टिकल में हम दिल से मन्सा सेवा करें तो वह पहुंचती जरूर है। लेकिन हमारा पहले योग लगे, मन्सा सेवा की आदत पड़ जाये।

जैसे सूर्य जब उदय होता है तो जहाँ अंधेरा होता है वहाँ रोशनी हो जाती है। हम तो ज्ञान सूर्य हैं, हमारी रोशनी क्यों नहीं पहुंचेगी! कईयों के पत्र आते हैं कि मुझे एकस्ट्रा शक्ति मिल रही है, उससे मैं आगे बढ़ रही हूँ। यह प्रैक्टिकल में पत्र आ रहे हैं। विधि ठीक है तो सिद्धि अवश्य होनी है और हुई पड़ी है।

मैं सकाश कहाँ से लूँ, उन्हीं की भावना है, बाबा ने निमित्त दादी को बनाया है। हम निमित्त हैं, वह भी निमित्त भावना से खींच लेते हैं। बुद्धियोग मधुबन से, बाबा से, दादी से है तो सकाश मिलती है।

सदा मुस्करायें, मूँझे नहीं, कभी माया छुए भी नहीं। माया से डरते हैं, माया आई माया आई, वह है क्या! वह हमारा कमजोर संकल्प ही तो है। तो संकल्प को संकल्प से निकाल दो।

यह आदत डालो बाबा हमारे सदा साथ है। जैसे जब कोई डर होता है तो पुलिस वाले को साथ रखते हैं, फिर डरते नहीं हैं, चलते जाते हैं। पुलिस वाला क्या है! हमारा तो बाबा सर्वशक्तिवान हमारे साथ है तो हमको डर किस बात का है! हम दिल से कहें “मेरा बाबा”, बाबा सामने न आवे यह हो ही नहीं सकता। लेकिन बाबा से दिल का प्यार कम है, ज्ञान सुना है, ज्ञान से समझते हैं हाँ हमारा बाबा है लेकिन वह प्यार नहीं है। अगर दिल का प्यार होता है तो प्यार वाला कभी भूल नहीं सकता। जैसे बच्चे

का आम से प्यार होता है तो जब भी कोई बजार जायेगा तो कहेगा आम ले आओ, भले सीजन न भी हो तो भी वही मंगायेगा। तो हमारा प्यार एक ही बाबा से जिगरी हो, तो बाबा हमारे लिए हाज़िर नाज़िर है। हम बाबा को याद करें, नजरो में आ जाता है लेकिन प्यार जिगरी चाहिए। कहाँ अटका हुआ प्यार होता है, वह नहीं हो क्योंकि उस समय माया भी सामना करेगी ना। उस बिचारी

को थोड़ा सा समय है, जब कोई जाने वाला होता है, समझता है मेरी हार हो रही है तो हाथ पांव सब जोर लगाता है। तो माया भी कोशिश कर रही है कि कैसे भी हमारे बन जायें, वह अपना सब कुछ यूज कर रही है। लेकिन हमारे साथ बाबा है, हम कहें मेरा बाबा और वह हाज़िर न हो, यह असम्भव है। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी जानकी जी की अनमोल शिक्षायें

“ज्ञान सूर्य बाबा से अच्छी तरह से सकाश लो, सन-बाथ करो तो अन्दर की सब बीमारियां खत्म हो जायेंगी”

(30-10-06)

बाबा एक तो ज्ञान सूर्य है, दूसरा ज्ञान का सागर है। बाबा ज्ञान सूर्य है तो प्रकाश भी देता और किचड़ा भी भस्म करता है। मुझे क्या करना है, वो समझ देता है - यह हुआ प्रकाश। जैसे सन-बाथ (सूर्य-स्नान) सब बीमारियों को खत्म करता है। तो हम सन-बाथ कैसे करेंगे? सन-बाथ लेना है तो कपड़े उतारेंगे ना, तब तो सन-बाथ होगा। हमें अगर सन-बाथ लेना है तो अशरीरी होना है, जिससे अन्दर से सारे जर्म्स खत्म हो जायें। सन बाथ लेते हैं तो सारा शरीर लाल-लाल हो जाता है क्योंकि डायरेक्ट सूरज की किरणें शरीर पर पड़ती हैं। ऐसे यहाँ भी बाबा के सामने एकदम अशरीरी होकर बैठना चाहिए, तो पता चल जाता है कि अन्दर जो बीमारी थी वो निकल गई इसलिए ज्ञान सूर्य बाबा से खूब अच्छी तरह से सकाश लो, न सिर्फ रोशनी, पर उसकी शक्ति डायरेक्ट अन्दर जाती है तो पुराना सब ऑटोमेटिक खत्म होता है। लेकिन यह ढीले-ढाले पुरुषार्थ से नहीं होगा।

कई कहते हैं हम तो बहुत अच्छा पुरुषार्थ करते हैं। यह भी जैसे अपने आपसे ठगी करते हैं, बाबा से भी ठगी करते हैं। पुरुषार्थ में दिखाते कुछ और हैं, होता कुछ और है इसलिए कम-से-कम पुरुषार्थ में ठगी मत करो। जैसा बाबा मेरा सत्य है, सच है, वैसा मैं हूँ? यह अपने आपको अच्छी तरह से देखो। सेवा तो हुई पड़ी है, हो जायेगी, कोई बड़ी बात नहीं है, परन्तु अपने को सच्चा बनाना - यह बहुत बड़ी बात है। इसमें सूक्ष्म पुरुषार्थ की जरूरत है। आत्मा के चित्त की स्मृति को समर्थ बनाने की जरूरत है। लक्ष्य और लक्ष्य-दाता की याद कभी भूले नहीं। क्या बनना है, बनाने वाला कौन है? यह पक्का याद रखना है तभी तो लक्ष्य हमारे स्वरूप में आ जायेगा।

ज्ञान और योग की ताकत से हम कमल फूल समान न्यारे रह सकते हैं। स्व का दर्शन, पर-दर्शन और पर-चिंतन से छुड़ाता है। स्व-दर्शन के बिगर पर-दर्शन, पर-दोष से छुटकारा हो नहीं सकता है। इसके लिए स्व पर और पढ़ाई पर अच्छी तरह से ध्यान देना है। बाबा कहते हैं अच्छे बच्चे जो होते हैं - वो सारा दिन बाबा की बातों का सिमरण करते हैं कि बाबा ने क्या कहा?...। बाबा जो कहता है वही मन में, पुरुषार्थ में चलता है और कुछ नहीं चलता है।

मनमत क्या होती है - यह हमको अनुभव ही नहीं है। मेरा विचार ऐसा है...यह संकल्प भी कभी नहीं आया होगा। जो श्रीमत है, उस पर चलने के लिए सखा रूप से नेचुरल रहे हैं। सखा को समानता में रहना शोभता है। मीठा बाबा कहता है - पुरुषार्थ करते रियलाइजेशन से अन्दर ही अन्दर अपने अभिमान को खत्म करो। पहले तो अन्दर से यह इच्छा हो कि अभिमान को खत्म करना है। सच्ची दिल से पुरुषार्थ क्या होता है? यह गहराई से बुद्धि में स्पष्टीकरण हो। बाकी किसकी गलती है या नहीं है उसमें हमारा क्या जाता है, बाबा जाने वो जाने... हमारे से कोई गलती न हो। दूसरे को शिक्षा देना छोड़ दो। जो प्यारे मीठे बाबा की शिक्षायें हैं वो अपने जीवन में हों। औरों के लिए क्या, सबके लिए शुभ चिंतक रहना, किसी के लिए कभी निराश नहीं होना, हमेशा शुभ-भावना से सहयोग देना। यह बहुत सूक्ष्म ध्यान रखना माना अपने को शुद्ध आत्मा, पुण्य आत्मा, महान आत्मा, धर्म आत्मा बना देना, इसके लिए दिल से सच्चा पुरुषार्थ करते रहो। बस। इसमें विघ्न आयेंगे तो निराश नहीं होना, ढीले नहीं पड़ना। जो ऐसा अपने ऊपर ध्यान रखता है वह व्यर्थ ख्यालातों से मुक्त हो मनमनाभव सहज हो जाता है।

फालतू व्यर्थ ख्याल आपेही नहीं आते, इसे हम स्वयं पैदा करते हैं। एक व्यर्थ आया तो औरों को साथ ले आता है, जो सारी शक्ति छीन लेता है। बाबा से कनेक्शन टूट जाता है। फिर मुख से बाबा-बाबा भी नहीं कहते हैं, इतना तो माया गला घोट देती है इसलिए बाबा कहते हैं - खबरदार रहो। वाह बाबा! वाह ड्रामा! वाह रे मैं! ऐसा सच्चा पुरुषार्थ, तीव्र पुरुषार्थ, कन्टीन्यु होता रहे, अपनी स्थिति ऊंची एकरस बनाना - यह भी एक शान है। सदा साथ का अनुभव बहुत सुखी रखता है। वो फिर सदा अन्तर्मुखी रहता है। अगर मैं यहाँ सन्तुष्ट रहकर सबको सन्तुष्ट नहीं कर सकती हूँ, तो मैं बाबा की मददगार नहीं हूँ। सेन्सिटिव नेचर वाला कभी सुखी नहीं रह सकता है, न ही कभी किसी को सुख देके सन्तुष्ट कर सकता है। तो सेन्सीबुल बन अपनी नेचर को बड़ा मीठा बनाओ। अपनी धारणा में मजबूत रहो जिससे कोई हमसे डिस्टर्ब न हो, न मैं कभी किसी से डिस्टर्ब हो जाऊँ।

स्व-चिंतन और ईश्वरीय चिंतन में रहो। जैसा कर्म हम करते हैं, जो करते हैं और भी देखके वही करते हैं। तो जितना ज्ञान अति सूक्ष्म है, उतनी सूक्ष्म चेंकिंग और चेंजिंग चाहिए। चेक किया चेंज हो गये, ऐसा ज्ञान कहता है। ज्ञान जो मिला वो जीवन में आया तो बाबा कहता है वाह बच्चे वाह! वाह ड्रामा वाह! अच्छा।

अन्दर कोई भी लीकेज है तो योग लग नहीं सकता। शक्ति मिल नहीं सकती। आत्मा, परमात्म शक्ति खींचती रहे उसी आधार से आत्मा प्रकृति को चलाती रहे क्योंकि आत्मा और शरीर दोनों को सतोप्रधान बनाना है। तो जैसे हमारा बाबा है, वैसे हमको करना है। किसी को देखकर कुछ नहीं करने का है। जो बाबा ने किया है वही करना है। ऐसा हमको बाबा का सपूत, लाड़ला, सिकीलधा बच्चा बनना है। जिसको जैसा बनना है वैसा ही चिंतन करना है। सारा दिन अपने चिंतन और भावना को देखो, दृष्टि में देखो एक बाबा ही बसता है! जैसे चित्रकार की बुद्धि में एक्यूरेट मूर्ति बनाने का रहता, वैसे बाबा हमारी मूर्ति बना रहा है।

हर बात में फॉरगिव करना, फॉरगेट करना यह पुण्य कर्म है। किसी की कमी को अपने अन्दर रखेंगे तो हमारे फेस पर वो बात आयेगी और वो बात हमने किसको सुनाई तो हमारे अन्दर क्या चलता है वो स्पष्ट दिखाई देगा। लेकिन सच्चा पुरुषार्थी जो होता है वो अपनी कमी को निकालने की कोशिश करेगा, उसका वर्णन नहीं करेगा। दे दान छूटे ग्रहण। जिसमें जो कमी हो वो ग्रहचारी दूर हो जाये। अपनी स्थिति में कोई विघ्न न पड़े।

कोई मनमत पर चलता है, कुछ भी करता है.. तो भी बाबा कभी यह नहीं कहेगा कि इसको यह सजा मिलनी चाहिए। वो माता, पिता, टीचर, सखा का पार्ट बजाता है। सतगुरु रूप से श्रीमत व डायरेक्शन भी देता है और सच्चा बच्चा, अच्छा बच्चा भी कहता है। अगर कोई भूल करके छिपाता है तो भी बाबा समझायेगा पर यह कभी नहीं कहेगा इसको सजा मिले। बाबा कहेगा यह मेरा काम नहीं है। माँ का काम, बाप का काम, शिक्षक का काम, सतगुरु का काम करता है, पर हर एक के कर्म के हिसाब-किताब में खुद नहीं जाता है। अपने को फ्री रखता है। शिवबाबा तो समय पर आके अपना पार्ट बजाके जाता है। बच्चों को नॉलेज देता है जो जितनी धारणा करते हैं वो उतना सुधर जाते हैं। हाँ, याद करते हैं तो उनके पाप नाश होते हैं। कर्मों की गुह्यगति समझाते हैं, परन्तु अच्छी तरह से ध्यान रखो कि ऐसा कोई भी काम नहीं करना जिससे सजा खानी पड़े। ध्यान से जो अमृतवेला करता है, मुरली सुनता है, बाबा उसमें बल भरता है।

याद माना क्या? हमको एक बाबा के सिवाए और कुछ याद न आये, हमारी याद ऐसी हो जो अवस्था परिपक्व हो। बाबा को याद करने से अवस्था मजबूत होती है। बात खत्म हो जाती है। चिंतन चलता ही नहीं है। बात को याद करते हैं तो बाबा याद आता ही नहीं है। बात में बात, बात में बात ऐसी याद आयी जब तक रोयेंगे नहीं तब तक वो बात भी नहीं छोड़ेगी। तो हमें एक अच्छा मिसाल बनना है, मुझे पढ़ाने वाला कौन, इस नशे में रहना है। तो याद रहे कि मेरी ऐसी लाइफ को बनाने वाला कौन? इसको चलाने वाला कौन? जिसके पास शक्तियों का स्टॉक होता है, उसको फुलस्टॉप लगाना आता है। जिसको फुलस्टॉप लगाना नहीं आता है उसके पास कोई भी शक्ति नहीं है। सर्वशक्तिवान की शक्ति काम तब करती है जब और कोई चिंतन न चले। लॉ और ऑर्डर में रहने वाला सेवाधारी स्वतः अन्दर ध्यान रखता है कि हमें निराकारी स्थिति में रहना है, निर्विकारी बनना है और सबके साथ मिलजुल कर चलते निरहंकारीपन का सबूत देना है।

तो अन्दर से जैसा संकल्प करेंगे, वैसा बनेंगे। संकल्प कैसा हो वो बाबा सिखाता है, परन्तु तुम बनोंगे वैसा जैसा संकल्प करोगे। जैसे ब्रह्मा बाबा के संकल्प में है - नारायण बनना है, इसके पहले अव्यक्त फरिश्ता बनना है। साकार में जब बाबा के पास बैठते थे तो उठने का दिल नहीं करता था। ऐसे हम अभी बाबा के साथ रहने के आदती बनें। हम दोनों अलग हो नहीं सकते। न वो हमसे जुदा, न हम उससे जुदा। वह हमारे साथ है, हम उनके साथ हैं। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“समर्पित भाईयों के प्रश्न, दादी जी के उत्तर”

प्रश्न:- आप जब बाहर जाती हैं तो क्या मधुबन की चिंता रहती? मधुबन में सीजन के समय क्या आपको सिरदर्द वा थकावट महसूस होती है?

उत्तर:- मधुबन से बाहर जाते तो मुझे चिंता नहीं रहती, परन्तु जब कोई काम-काज हो तो समझते दादी प्रेजेंट होनी चाहिए। बहुत टाइम दूर नहीं होनी चाहिए। सेवा के निमित्त याद करते। बाकी सीजन के समय मुझे कोई सिरदर्द नहीं होता। बाबा के कार्य में व्यस्त रहो तो कभी थकावट महसूस नहीं होती। मैं 18 घंटा भी सेवा में बिजी रहती लेकिन कभी ऐसी थकावट नहीं होती। 10 मिनट भी आंख मीची तो फ्रेश हो जाती। मैं नींद करने जाती तो आधे मिनट में नींद आ जाती। मैं किसी बात के चिंतन वा चिंता में अपनी नींद नहीं फिटती। न किसी बात का इफेक्ट मेरी तबियत पर आता। बाबा का थैंक्स है- मुझे कभी मन का या मुख का रोना आता नहीं। बाबा ने स्थिर रहने की, सामना करने की शक्ति दी है। इसलिए बाबा का प्यार है, कृपा है.. चलती बाबा के नाज पर हूँ, बाबा के सिवाए मेरा और कुछ नहीं। बाबा ने हमारे ऊपर सारे सृष्टि को पावन करने की जिम्मेवारी रखी है। यह हमारा संगम पर कर्तव्य है। इसलिए यहाँ रहते विश्व के प्लैन चलते। देश-विदेश बुद्धि में घूमता रहता। बाबा के सब बच्चे याद आते। वह याद करते तो हमें भी याद आते। पर याद आते भी याद नहीं। बाबा की सीजन होती तो भल कितना भी काम बढ़ जाता, एक का 10 गुणा काम हो जाता लेकिन मुझे बोझ महसूस नहीं होता। मैं ऐसा कभी नहीं सोचती कि अब कौन इतना झंझट करे। बाबा के बच्चे आते, सभी को खुशी होती। मुझे तो उन सभी का प्यार मिलता। मैं बोझ समझती ही नहीं।

प्रश्न:- बाबा तो आपके साथ है ही, लेकिन आपका कोई गुप्त पुरुषार्थ है?

उत्तर:- हाँ - हर बात में मैं बाबा के साथ-साथ अपने आपमें फुल पॉवर रखती। समझो कोई संकल्प आता है तो बाबा की शक्ति से उसे समाप्त कर देती। आया और फुलस्टाप लगा। मैं किसी बात में वीक नहीं समझती। बाबा ने जो अनेकानेक शक्तियाँ

दी हैं, उनको मैं अपने साथ रखती हूँ। यह मेरा पुरुषार्थ है। किसी भी बात में मैं वीक हूँ- तो ये मेरे रजिस्टर पर दाग हो जाए। बाबा ने हमें 100 विजयी कहा है तो किसी भी बात में मेरी मार्क्स कम न हो। न दिल में दाग, न मन में दाग न स्थिति में दाग, न रजिस्टर में दाग.. यही अटेंशन सदा रहता है। सुबह से रात तक अपने ऊपर फुल अटेंशन है। संकल्प पर, बुद्धि पर, आंखों पर, मुख पर सब बातों पर अटेंशन है। मैं अटेंशन लूज छोड़ती ही नहीं।

प्रश्न:- हम ऐसा कौन सा पुरुषार्थ करें - जो सदा आगे बढ़ते रहें?

उत्तर:- उसके लिए अपना रजिस्टर हर बात में राइट रखो। किसी भी बात में रजिस्टर पर दाग न आये। मन्सा, वाचा, कर्मणा हर बात में अपना रजिस्टर बिल्कुल साफ, स्वच्छ सच्चा राइट रहना चाहिए। यही है आगे बढ़ने का पुरुषार्थ।

प्रश्न:- यदि हमें माला में आने की या सम्पूर्ण बनने की इच्छा है, तो इसे कामना नहीं कहेंगे?

उत्तर:- यह कामना नहीं - यह पुरुषार्थ है। श्रेष्ठ पुरुषार्थ का लक्ष्य तो हरेक को रखना चाहिए। अगर लक्ष्य श्रेष्ठ नहीं होगा तो पुरुषार्थ कैसे करेंगे। जितना पुरुषार्थ करो, रेस करो उतना अच्छा है।

प्रश्न:- आपने अपनी अवस्था किस विशेष पुरुषार्थ से ऐसी बनाई है? क्या आपको शुरू से ही ऐसा पुरुषार्थ है?

उत्तर:- मेरा हर धारणा पर पूरा अटेंशन है। बाबा माना धारणामूर्त। मेरे से किसी भी प्रकार की देह अभिमान के वश गलती नहीं होनी चाहिए। अगर रिंचक हो जायेगी तो मैं उसे पूरा कवर करूँगी। मिटा दूँगी। मुझे उसे मिटाने में 5 सेकेण्ड भी नहीं केवल सेकेण्ड लगता है। आदि से ही मेरा अपनी धारणाओं पर अटेंशन है। सेन्टर पर रहते भी मैं हमेशा यह ध्यान रखती थी कि ऐसा कोई कर्म न हो जो मेरी रिपोर्ट निकले या मेरी शिकायत बाबा तक जावे। अच्छा। ओम् शान्ति।